।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16

दयानन्दाब्द १९१
सृष्टि सं.- १९६०८५३११५

वर्ष–13 अंक–18 माघ कृ. 11 से माघ शु. 12 सं. 2071 वि. 16 से 31 जनवरी 2015 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 10 प्रति–5/–

ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य नहीं रहे

आर्य जगत में शोक की लहर

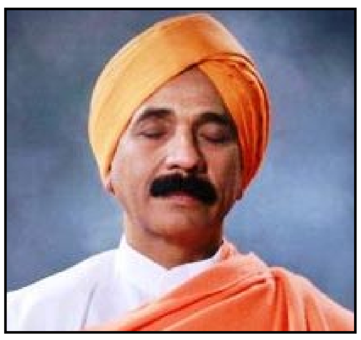

दिल्ली। आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान, सुप्रसिद्ध आर्य नेता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान आचार्य राज सिंह आर्य अचानक हुए हृदयाघात के कारण हमारे बीच नहीं रहे। उनके निधन के समाचार से सम्पूर्ण आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गयी तथा श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लग गया। उनके निधन से आर्यजगत को एक अपूर्णनीय क्षति हुई है। उनके नेतृत्व में देश तथा विदेश में अनेक राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया गया। आर्यजगत के शीर्षस्थ विद्वानों व वक्ताओं में उनकी गणना होती थी।

6 जनवरी को प्रातः 8.00 बजे से 11.30 तक उनके पार्थिव शरीर को 15, हनुमान रोड, कनाट प्लेस, नयी दिल्ली पर अन्तिम दर्शन हेतु रखा गया एवं निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से अंतिम संस्कार किया गया।

टंकारा चलो

ऋषि जन्मभूमि में बोध उत्सव पर भव्य कार्यक्रम

रामनाथ सहगल
टंकारा (गुजरात)।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा में प्रति वर्ष की भांति आगामी 16 से १८ फरवरी तक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक टंकारा ट्रस्ट के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर गुजरात के राज्यपाल ओमप्रकाश कोहली मुख्य अतिथि होंगे तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति के प्रधान एवं टंकारा के ट्रस्टी पूनम सूरी कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। यह जानकारी ट्रस्ट के प्रधान सत्यानंद मुंजाल व मंत्री रामनाथ सहगल द्वारा जारी विज्ञप्ति में देते हुए आर्यजनों से भारी संख्या में सहभागिता की अपील की गयी है। आर्यावर्त केसरी की ओर से भी गतवर्षों की भांति आर्यों का जत्था टंकारा व गुजरात यात्रा पर रवाना हो रहा है।

बरनावा में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 22 से

लाक्षागृह स्थित यज्ञशाला -केसरी

बरनावा (बागपत) उ.प्र.। पूर्वजन्म के शृंगीऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा स्थापित महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, (लाक्षागृह) बरनावा में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 22 से 2८ फरवरी तक भव्य एवं विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा।

ज्ञातव्य हो कि यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष गांधीधाम समिति तथा महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय बरनावा द्वारा किया जाता है, जिसमें देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु भाग लेकर धर्म लाभ तथा आत्म शान्ति पाते हैं।

रामलीला मैदान में आयोजित विशाल जनसभा के मंच का भव्य दृश्य- केसरी।

स्वामी श्रद्धानन्द के ८८वें बलिदान दिवस पर निकली भव्य शोभायात्रा

राष्ट्र के प्रखर स्तंभ थे स्वामी श्रद्धानन्द

नई दिल्ली। स्वामी श्रद्धानन्द के ८८वें बलिदान दिवस पर राष्ट्र द्वारा उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया। उनकी शहादत पर दिल्ली में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी तथा रामलीला मैदान में एक जनसभा का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1902 में गुरुकुल कांगडी की स्थापना की थी। वे आर्यसमाज के प्रमुख स्तम्भ तथा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। वे शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक थे उन्होंने छुआछूत एवं सतीप्रथा के विरुद्ध जनांदोलन चलाते हुए नारी शिक्षा तथा विधवा विवाह के लिए आवाज़ बुलंद की। 1926 में एक धर्मांद व्यक्ति द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी।

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी 25 दिसम्बर को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई जो रामलीला ग्राउंड में विशाल जनसभा के रूप में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्यरत्न महाशय धर्मपाल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व पूर्व सांसद डॉ. राम प्रकाश, कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री राजीव आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, उषा अग्रवाल, ममता महतानी, पं. महेन्द्रपाल आर्य, ब्रजेश गोतम आदि सहित देशभर से पधारे आर्यजनों ने भारी संख्या में सहभागिता की तथा स्वामी श्रद्धानन्द को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

कोटा जेल में भेंट किये वेदों के सैट

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

सैन्ट्रल जेल में वेद भेंट करते हुए अर्जुन देव चड्डा व अन्य- केसरी।

ईश्वरीय वाणी वेद हमें सकारात्मक सोच देती है। वेद हमें अच्छे विचार देता है, मानवीय गुणों का विकास वेद से होता है। वेद का स्वाध्याय करें। यहां रहकर जीवन में सुधार करें एवं यहां से जाने के बाद समाज की मुख्य धारा से जुड़ें। उक्त विचार मुख्य अतिथि के.के. कौल, पूर्णकालिक निदेशक डी.सी.एम. श्रीराम ने केन्द्रीय कारागृह कोटा में आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना कर समाजसेवा का मूलमंत्र दिया। आर्यसमाज के सुधार कार्यक्रमों से हम सभी क्षेत्रों में अग्रणी हैं। हम सकारात्मक सोच रखें जिससे आपके बुरे विचार स्वतः समाप्त हो जायेंगे एवं आप अच्छा सोचेंगे।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि सभी समस्याओं का समाधान वेद में है। वेद हमें अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है।

इस अवसर पर डी.ए.वी. के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य, डी.ए.वी. के संगीतज्ञ तुलसीदान सिंह, ने भजनोपदेश किये।

आर्यसमाज द्वारा जेल के पुस्तकालय के लिए वेद की 14 पुस्तकों का सैट जेल अधीक्षक शंकर सिंह व जेलर नरेन्द्र स्वामी को भेंट किया गया, जिससे यहां शिक्षित कैदी इसका स्वाध्याय करके अपने जीवन को सुधारें व दूसरों के जीवन को भी लाभान्वित करें। इस अवसर पर कैलाश बाहेती, हरिदत्त शर्मा, जे.एस.दुबे, श्रीचंद गुप्ता व राजीव आर्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

- आर्यसमाज तथा महिला आर्यसमाज, कायमगंज का 136वां वार्षिकोत्सव 26, 27, 2८ दिसम्बर 2014 को धूमधाम से सम्पन्न।
(केशवचन्द्र आर्य, मंत्री)
- महिला आर्यसमाज, मानसरोवर, जयपुर का 20वां स्थापना दिवस 13 से 16 नवम्बर 2014 तक सम्पन्न।
(ईश्वर दयाल माथुर)
- वेद प्रचार मण्डल, अमरोहा, मुरादाबाद मण्डल द्वारा प्रकाशवीर शास्त्री जन्मदिवस समारोह 30 दिसम्बर 2014 को रहरा में सम्पन्न।
(यतीन्द्र विद्यालंकार, मंत्री)
- आर्यसमाज सूरसागर, जोधपुर का 60वां वार्षिकोत्सव 25 से 2८ दिसम्बर 2014 तक धूमधाम से सम्पन्न।
(नरसिंह सोलंकी, मंत्री)
- आर्यसमाज गांधीधाम का हीरक जयंती महोत्सव 12 से 14 दिसम्बर 2014 को सम्पन्न।
(वाचोनिधि आचार्य, महामंत्री)
- न्योली शुगर मिल के पेराई सत्र का शुभारम्भ आचार्य संजीव रूप के ब्रह्मत्व में भव्य यज्ञ द्वारा सम्पन्न।
(प्रज्ञा आर्या)
- 16 नवम्बर 2014 को योगनिष्ठ सन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का धूमधाम से हुआ अमृत महोत्सव। भव्य स्मारिका का हुआ विमोचन।
(डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान)
- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में रोहतक, (हरियाणा) में 23 नवम्बर 2014 में हुआ विशाल युवा शक्ति सम्मेलन। हजारों ने लिया कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का संकल्प।
(आचार्य सन्तराम आर्य)
- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में 17वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 11, 12 अक्टूबर 2014 को भव्यतापूर्ण सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजनों ने ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के मंतव्यों के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया।
(आचार्य सन्तराम आर्य)
- गुरुकुल आर्य नगर, हिसार, हरियाणा का स्वर्ण जयंती महोत्सव 6 व 7 दिसम्बर 2014 को हर्षोल्लास से मनाया गया।
(लाल बहादुर खोवाल, मंत्री)
- आर्यसमाज भरवा सुमेलपुर, जिला हमीरपुर, उ.प्र. का 3८वां वार्षिक समारोह 6 से 9 नवम्बर 2014 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।
(डॉ. विवेक कुमार आर्य)

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

अन्तरराष्ट्रीय स्तर के वैदिक विद्वान, वक्ता, लेखक व सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री लोखंडे को जयकिशन दास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट की ओर से संस्कृति गौरव सम्मान से विभूषित किया गया।

मनाया राष्ट्रीय एकता दिवस

हरिद्वार (प्रदीप कुमार जोशी)। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरयाल निशंक तथा कुलपति प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सत्यव्रत व स्वाती बंधे परिणय सूत्र में

मुजफ्फरनगर। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा के भतीजे डॉ. सत्यव्रत वर्मा का शुभ विवाह डॉ. स्वाती के साथ 9 दिसम्बर 2014 को दिल्ली में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एमडीएच के स्वामी महाशय धर्मपाल, स्वामी अग्निवेश, स्वामी आर्यवेश, विनय आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, चौधरी वीरेन्द्र सिंह, सांसद सत्यपाल सिंह आदि सहित अनेक आर्यजनों ने नवयुगल को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

पटना। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार द्वारा तीन दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल, एमडीएच, दयानन्द सत्यार्थी, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, गंगा प्रसाद, रमेन्द्र गुप्ता आदि सहित भारी संख्या में श्रद्धालु नर-नारियों ने भाग लिया।

स्वामी धर्ममुनि का 79वां जन्मदिवस मनाया

बहादुरगढ़ (झज्जर)। आत्म शुद्धि आश्रम के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्म मुनि दुग्धाहारी के 79वें जन्मदिवस पर स्वामी सवितानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में 20 नवम्बर 2014 को आश्रम में वृहद् यज्ञ एवं सुर एवं संगीत संध्या का भव्य आयोजन किया गया। सभी ने स्वामी जी के दीर्घायु व सुस्वास्थ्य की मंगलकामना की।

विदेश में दूसरी बार 10८ कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

नई दिल्ली (सूर्यकांत मिश्रा)। मूर्धन्य वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में कनाडा के आर्यसमाज, मारखम, टोरंटो में 10८ कुण्डीय यज्ञ श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में आर्यजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक गायत्री गौरव का लोकार्पण और निशुल्क वितरण किया गया।

पंचकुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

हापुड़। अशोक नगर अल्कापुरी में वैदिक अनुसंधान समिति के प्रमुख कार्यकर्ता एवं याज्ञिक विवेक त्यागी द्वारा पूर्व की भांति 19 से 21 दिसम्बर 2014 तक भव्य पंच कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन गुरुकुल बरनावा के आचार्य गुरुवचन शास्त्री के ब्रह्मत्व में विधि विधान के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी धर्मेशवरानन्द, सुमन कुमार वैदिक, पं. माया प्रकाश त्यागी, अजय कुमार गोयल, प्रदीप त्यागी आदि ने सहभागिता की।

- आर्यसमाज रामनगर, रुड़की के तत्वावधान 31 अक्टूबर 2014 को पटेल जयंती धूमधाम से सम्पन्न।
(तेजपाल सिंह आर्य)

आगामी कार्यक्रम

- 24, 25 जनवरी 2015 को जे.एस. हिन्दू (पीजी) कॉलेज, अमरोहा में होगा अखिल भारतीय सेमिनार, देश भर से भाग लेंगे प्रतिनिधि।
(डॉ. ए.के. रुस्तगी)
- दयानन्द मठ, रोहतक, हरियाणा में ८ फरवरी 2015 को होगा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन।
(मा. रामपाल आर्य, मंत्री)

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज, मुम्बई (कांकरवाडी)

प्रधान- देशबन्धु शर्मा
मंत्री- विजय गौतम
कोषाध्यक्ष- किशनलाल महाजन

स्त्री आर्यसमाज, सिविल लाईन्स, अलीगढ़

प्रधान- दर्शन देवी भारद्वाज
मंत्री- उषा गर्ग
कोषाध्यक्ष- डॉ. कमला कुमार

आर्यसमाज, भीलवाड़ा

प्रधान- विजय शर्मा
मंत्री- अशोक टोडावाल
कोषाध्यक्ष- द्वारका प्रसाद पण्ड्या

हार्दिक श्रद्धांजलि

- आर्यसमाज बदायूं के पूर्व जिला प्रधान, इस्लामनगर निवासी राम कुमार आर्य का 6 दिसम्बर 2014 को निधन, सामाजिक संगठनों ने दी हार्दिक श्रद्धांजली।
(स्मिता आर्या)

विश्वबन्धु आर्य नहीं रहे

आर्यसमाज को समर्पित विश्वबन्धु आर्य का देहावसान 27 नवम्बर 2014 को हो गया। श्री आर्य आर्यवीर दल की शाखाओं के मुख्य अनुदेशक रहे। स्वतंत्रता संग्राम में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसके अतिरिक्त गोरक्षा आन्दोलन में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अति विशेष सूचना

अपने सभी लेखकों से हम विनम्र निवेदन करते हैं कि हमारे पास प्रतिदिन ढेर सारे लेख आते हैं। सभी कुछ न कुछ विशिष्ट ज्ञान से ओतप्रोत होते हैं, किन्तु सभी का प्रकाशन कर पाना संभव नहीं हो पाता। जबकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि लेख लिखने में कितना श्रम लगता है। इसलिए हमने एक विशेष योजना प्रारम्भ की है कि लेखों को पुस्तकाकार रूप में निरंतर छापते रहें। वैसे भी पुस्तक में छपने की अपनी मर्यादा और महत्व दोनों होते हैं। इसके लिए लेखक महोदय अल्प आर्थिक सहयोग (मात्र रु0 250/- अथवा अधिक) करके इस प्रकाशन यज्ञ में सहयोग करेंगे, ऐसी हमें आशा है। सहयोग हेतु साधुवाद।

नोट :- लेखकों द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि के बराबर मूल्य की पुस्तकें उन्हें निःशुल्क दी जाएंगी।

-सम्पादक

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- रामायण का वास्तविक स्वरूप, पृष्ठ-८0, मूल्य-20/-
- अर्चना यज्ञ पद्धति, पृष्ठ-56, मूल्य-16/-
- अर्चना यज्ञ पद्धति, पृष्ठ-4८, मूल्य-12/-
- यज्ञ पद्धति, पृष्ठ-120, मूल्य-35/-
- बन्दा वैरागी (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- साधना 'प्रबन्ध काव्य' (कवि रघुनाथप्रसाद साधक), पृ. -3८4, (सजिल्द), मूल्य-300/-
- पं. प्रकाशवीर शास्त्री (डॉ. अशोक कुमार आर्य), मूल्य- 5/-
- तारा टूटा (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृ0-52, मूल्य- 14/-
- परिधियों के स्पर्श/ यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ), पृष्ठ-112, मूल्य-८0/-
- प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ- अभिनन्दन ग्रन्थ, (प्रेस में)
- सत्यार्थ प्रकाश, (महर्षि दयानन्द), पृ.-520 (सजिल्द), मूल्य-160/- (प्रेस में)
- आर्यजगत के प्रमुख राष्ट्रीय स्तम्भ, (शीघ्र प्रकाश्य)
- आर्यसमाज के प्रखर व्यक्तित्व, (शीघ्र प्रकाश्य)
- नवजागरण के पुरोधा- महर्षि दयानन्द सरस्वती, (शीघ्र प्रकाश्य)
- समालोचना शास्त्र (कवि रघुनाथ प्रसाद साधक), (शीघ्र प्रकाश्य)
- मानव की जीवन यात्रा (जे.एन. कौशिक), (शीघ्र प्रकाश्य)
- आर्य कन्या की सूझबूझ (शीघ्र प्रकाश्य), पृ0-52, मूल्य- 14/-

: लघु पुस्तकें/ट्रैक्ट :

- हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान
मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- यज्ञ और पर्यावरण, मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- दयानन्द सप्तक, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- ब्रह्मराशि, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- आर्यसमाज (राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर')
मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें? मूल्य- एक सौ रुपये सैंकड़ा

: आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें :

- वैदिक सिद्धान्त विमर्श (पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय) मूल्य- 25/-
- सत्यार्थप्रकाश दर्शन (सत्यार्थ प्रकाश विषयक महत्वपूर्ण आलेखों का संग्रह), मूल्य- 100/-

वेदवाणी–वितान प्राच्य विद्या शोध संस्थान द्वारा

पातंजल महाभाष्य में विन्ध्य विषय पर प्राच्य विद्या संगोष्ठी संपन्न

आचार्य सुद्युम्न
कोलगवां, सतना (म.प्र.)

वेदवाणी–वितान प्राच्य विद्या शोध संस्थान, बैंक कॉलोनी रोड, (दूरभाष–07672250664) द्वारा आयोजित 'प्राच्य विद्या संगोष्ठी' का द्विदिवसीय सत्र सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी का विषय ''पतंजलि के ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित विन्ध्य की दशा और दिशा'' था। संगोष्ठी का शुभारम्भ ज्ञान दीप जलाकर किया गया। तदनन्तर वैदिक व लौकिक मंगलाचरण किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता हिन्दी के पूर्व प्रोफेसर डॉ0 सुमेर सिंह बघेल 'शैलेश' ने की। मुख्य अतिथि के रूप में वाराणसी से पधारे, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर पद पर आचार्य सदाशिव द्विवेदी थे। इन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह मध्य प्रदेश की भूमि साहित्यिक व सांस्कृतिक दोनों विरासतों की धनी है। इस पुण्य भूमि पर अनेक विद्वानों, कवियों, लेखकों ने जन्म लिया व इसे अपनी साधनास्थली भी बनाया। कालिदास के ग्रन्थों में विन्ध्य का वर्णन करते हुए पतंजलि व कालिदास को लगभग समकालिक भी बताया तथा कहा कि पतंजलि को समझने के लिए कालीदास के ग्रन्थों का अध्ययन अनिवार्य है। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 किरण आर्या (असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर) तथा एशिया के एकमात्र विकलांग विश्वविद्यालय से डॉ0 महेन्द्र उपाध्याय उपस्थित थे।

कार्यक्रम के संयोजक राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित आचार्य सुद्युम्न के द्वारा उपस्थित विद्वानों का स्वागत व सम्मान किया गया। आचार्य जी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य से सभी को लाभान्वित किया। उन्होंने बताया कि महाभाष्य मूलतः व्याकरण का महान् ग्रन्थ है। ''त्रिमुनि व्याकरणम्'' के अन्तर्गत सम्मिलित होने वाले पतंजलि के बिना आज हम संस्कृत व्याकरण की कल्पना भी नहीं कर सकते। पातंजल महाभाष्य के उदाहरण, विभिन्न लौकिक न्यायों से तत्कालीन इतिहास, कला, संस्कृति की भी बहुत अच्छी जानकारी मिलती है। अतः महाभाष्य के माध्यम से तत्कालीन इतिहास का बोध करना, यह शोध की एक अन्य दिशा भी हो सकती है। इसी भावना से इस संगोष्ठी का उपक्रम किया गया है।

पातंजल महाभाष्य में उत्तर में काश्मीर, शाकल, दक्षिण में मलय, दक्षिणापथ, पश्चिम में भृगु–कच्छ, गुर्जर, पूर्व में अंग, वंग, कलिंग के वर्णन से उनके विस्तृत भौगोलिक परिज्ञान का परिचय मिलता है। परन्तु विन्ध्य का उल्लेख अत्यन्त स्वल्प है। अतः उनके संकेतों से इस विषय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उन्होंनें अपने विवरण में काश्मीर से लेकर नर्मदा से लगे हुए पारियत्र पर्वत तक मध्यदेश या आर्यावर्त की सीमा मानी है। इस भूभाग का उन्होंने अत्यन्त प्रतिष्ठा से वर्णन किया है। यहाँ के वातावरण को देखकर उन्होंने एक स्थान पर कहा है कि यहाँ तो गाँव–गाँव में कठ तथा कलाप शाखा वाले देशों का पारायण देखा जाता है। आश्चर्य होता है कि जिस समय इस भूभाग में बौद्धों का प्राबल्य था उस समय उन्हें सर्वत्र वैदिक संस्कृति का प्रचार देखने को मिल रहा था। जब विदिशा में पीतवस्त्रधारी श्रमण व सामनेर विचरण करते थे तब उन्हें सर्वत्र लाल पगड़ी वाले ऋत्विजों के विवरण की सूचना मिलती थी।

इस प्रकार स्पष्ट विदित होता है कि महर्षि पतंजलि वैदिक परम्परा के महान् संवाहक थे। उनके पश्चात् सभी युगों में बिन्ध्य के साथ–साथ देश के सभी भूभागों में जो वैदिक संस्कृति की धारा प्रवाहमान हुई, उसमें महर्षि पतंजलि के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। इस प्रकार महर्षि पतंजलि केवल अपने महान् व्याकरण के लिए ही नहीं अपितु देश में सभी युगों में महान् संस्कृति को प्रचारित करने के लिए भी प्रख्यात रहे हैं। द्वितीय दिवस के सत्र में डॉ0 किरण आर्या, डॉ0 महेन्द्र उपाध्याय, प्रतिभा, प्रियंका, संजीवनी, कल्पना आर्या, प्रीति, मनीषा आर्या व आयुषी राणा तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए हुए प्रतिभागियों द्वारा शोधपत्रों का वाचन किया गया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक थे पं० हरिसिंह त्यागी : डॉ. हरिगोपाल

- **पं. हरिसिंह त्यागी के जीवन पर हुए विचार गोष्ठी**
- **डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' द्वारा संपादित ग्रन्थ का हुआ विमोचन**

डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित'
हरिद्वार

हरिद्वार, 'दीपशिखा'' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच ज्ञानोदय अकादमी द्वारा आचार्य पं0 हरिसिंह त्यागी के जीवन पर विचारगोष्ठी तथा 'भारतीय संस्कृति के पुरोधा आचार्य पं0 हरिसिंह त्यागी स्मृतिग्रन्थ का विमोचन ज्ञानोदय अकादमी के सभागार' में किया गया।

डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित' द्वारा संपादित ग्रन्थ 'भारतीय संस्कृति के पुरोधा आचार्य पं. हरिसिंह त्यागी' का विमोचन वरिष्ठ साहित्यकार के0एल0 दीवान, गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति डॉ0 हरिगोपाल शास्त्री, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 विजयपाल शास्त्री तथा गुरूकुल ज्वालापुर के प्राचार्य डॉ. केशव प्रसाद उपाध्याय ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार के.एल. दीवान, डॉ. हरिगोपालशास्त्री, प्रो. विजयपाल शास्त्री तथा डॉ. केशवप्रसाद उपाध्याय को माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ा कर सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि एवं कुलपति डॉ. हरिगोपाल शास्त्री ने कहा कि आचार्य पं. हरिसिंह त्यागी का जीवन बड़ा ही महान था, वे आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी तथा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक थे। वे गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के ऐसे सजीव इतिहास थे, जिसे कभी विस्मरण नहीं किया जा सकेगा। ऐसे आशुकवि, सहज उपासक, संत, विद्वान, निरभिमानी व्यक्ति के सम्बन्ध में जितना कहा जाये उतना कम है। डॉ. शास्त्री ने कहा कि इस महामानव का व्यक्तित्व और कृतित्व प्रेरणास्पद तो है ही उच्च महानता का सम्बल भी है। मेरी आचार्य जी के प्रति यही भावाञ्जलि है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं गुरूकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. विजयपाल शास्त्री ने कहा कि मैंने वर्ष 1959 में गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में कक्षा 6 में प्रवेश लिया था और उन्हीं के संरक्षण में रह कर ब्रह्मचार्याश्रम की दिनचर्या का आरम्भ किया। 10वीं कक्षा तक उन्होंने मुझे संस्कृत साहित्य और संस्कृत व्याकरण भी पढ़ाया। वर्ष 1971 में शिक्षा पूर्ण कर मैंने गुरूकुल छोड़ा, तब तक उनका संरक्षण और मार्ग दर्शन मुझे मिलता रहा। प्रोफेसर

बायें से- स्मृतिग्रंथ संपादक डॉ. सुशील कुमार त्यागी, प्राचार्य डॉ. केशव प्रसाद उपाध्याय, कुलपति डॉ. हरिगोपाल शास्त्री, प्रो. विजयपाल शास्त्री स्मृति ग्रंथ का विमोचन करते हुए- केसरी।

शास्त्री ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं ऐसे निर्मल और निष्कलुष गुरू जी के सान्निध्य में रह कर अध्ययनरत् रहा आज मैं जिस स्थिति में हूँ वहाँ तक पहुंचाने में उनका आशीर्वाद, सदाचार शिक्षण और मार्गदर्शन ही में सम्बल रहा।

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राचार्य डॉ. केशवप्रसाद उपाध्याय ने कहा कि पण्डित हरिसिंह त्यागी पूरे जीवन गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से जुड़े रहे व गुरूकुल ज्वालापुर के यशस्वी स्नातकों में से एक थे। उन्होंने लगभग 50 वर्षों तक इस संस्था में प्राध्यापक, आश्रमाध्यक्ष तथा प्राचार्य आदि अनेक प्रतिष्ठित पदों पर रह कर कार्य किया। वे संस्कृत, हिन्दी भाषा के मर्मज्ञ तथा वेद एंव दर्शनशास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे।

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राध्यापक एवं 'भारतीय संस्कृति के पुरोधा आचार्य पण्डित हरिसिंह त्यागी ग्रन्थ के सम्पादक डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' ने कहा कि यह ग्रन्थ पण्डित हरि सिंह त्यागी के व्यकितत्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ में देश विदेश के विभिन्न विद्वानों द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। साथ ही आचार्य जी के द्वारा लिखे गये संस्कृत लेख, हिन्दी लेख तथा कविताएँ भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित हैं। यह ग्रन्थ सात अध्यायों में विभक्त है जो भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। डॉ0 'अमित' ने कहा कि वे मेरे आदर्श गुरू पितामाह तथा साहित्यिक मार्गदर्शक थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की महानता

संसार के महापुरूषों में महर्षि दयानन्द की शान निराली है। अन्य महापुरूषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा, कोई विद्वान है तो योगी नहीं, कोई योगी है तो सुधारक नहीं, कोई सुधारक है तो निर्भीक नहीं, कोई निर्भीक है तो ब्रहाचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो सन्यासी नहीं, कोई सन्यासी है तो निर्भीक वक्ता नहीं, कोई वक्ता है तो लेखक नहीं, कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं, कोई सदाचारी है तो कोई परोपकारी नहीं, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं, कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देश भक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेद भक्त नहीं, कोई वेद भक्त है तो उद्धार नहीं, कोई उद्धार है तो शुद्ध आहार नहीं, कोई शद्धाहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल व दयालु नहीं, कोई सरल व दयालु है तो संयमी नहीं, परन्तु आप ये सभी गुण एक जगह देखना चाहें तो देव दयानन्द में देख सकते हैं। आचार्यों के आचार्य, परिब्राजक सम्राट, वेदविद्याधिपति, शास्त्र निष्णात सर्वतंत्र स्वतंत्र व्याकरण महोदधी, ब्राह्मण कुल कमल भास्कर, शास्त्रार्थ महारथी, दिग्गज, मेधावी, अद्भुत, अलौकिक, तार्किक, मुक्त आत्मा।

जगदगुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती

संक्षिप्त समाचार

सद्गति की कामना

- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दयानन्द सेवाश्रम संघ की संचालिका माता प्रेमलता शास्त्री के आकस्मिक निधन पर गुरुकुल आश्रम आमसेना ने व्यक्त किया गहरा शोक। दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रभु से की कामना।

(स्वामी वृतानन्द सरस्वती, आचार्य)

वार्षिकोत्सव मनाया

- आर्यसमाज गढ़वा (झारखंड) का ७८वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया। राष्ट्रीय प्रवक्ता वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने अपने भजनोपदेश से दी नई दिशा।

(विनय प्रकाश केसरी)

वार्षिकोत्सव आयोजित

- आर्यसमाज नवाबगंज गोंडा का ८८वां वार्षिकोत्सव व राष्ट्र कल्याण यज्ञ 19 से 22 नवम्बर 2014 तक आचार्य संजीव रूप के ब्रह्मत्व में आयोजित। गूंज उठा वैदिक उद्घोष। जनता हुई भावविभोर।

(शैलेन्द्र कुमार आर्य)

सद्गुणों का संग ही सत्संग

- आर्यसमाज एवं विद्याश्री विद्यालय, नारायणपुर- इकौना (श्रावस्ती) द्वारा आयोजित वृहद् यज्ञ एवं वैदिक सत्संग में विद्वान आचार्य संजीव रूप ने कहा सद्गुणों का संग ही है सत्संग जो आर्यत्व के संकल्प से प्राप्त होते हैं।

(चन्द्र केतु आर्य, प्रधान)

वेदकथा का आयोजन

- विनय नगर विकास समिति (अलीगढ़) के सौजन्य से वेद पार्क में 5 दिवसीय वेदकथा का भव्य आयोजन। वेदप्रवक्ता आचार्य संजीव रूप महोपदेशक एवं कवि ने जलाई वेद की पावन ज्योति। क्षेत्र भर में गूंजा आर्य समाज का नाद।

(राजेन्द्र सिंह, संयोजक)

सोमेन्द्र ने किया नेट

- महर्षि दयानन्द गुरुकुल महा विद्यालय, पूठ, पुष्पावती (बहादुरगढ़) गाजियाबाद के स्नातक सोमेन्द्र शास्त्री ने उत्तीर्ण की यूजीसी की नेट परीक्षा। गुरुकुल के संचालक स्वामी धर्मेशवरानन्द सरस्वती ने दिया आशीर्वाद। गुरुकुल में हर्ष की लहर।

(पंकज कुमार)

झज्जर में वैदिक मण्डल द्वारा बेटी बचाओ अभियान

सुभाष आर्य
झज्जर।

वैदिक सत्संग मण्डल, यज्ञ समिति व भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के तत्वावधान में 'बेटी बचाओ' अभियान के तहत मौहल्ला भट्टी गेट में यज्ञ-भजन व प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ ब्रह्मा योगाचार्य विवेक गोयल व यजमान मुकेश आर्य एवं सोनिया आर्या रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं0 रमेश चन्द्र कौशिक ने की।

यज्ञ ब्रह्मा ने कहा कि यज्ञ करने वाले सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त करते हैं व जीवन में आने वाली सभी बाधाओं को सरलता से कर लेते हैं। मंडल अध्यक्ष पं0 रमेश चन्द्र कौशिक ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बेटी को नहीं, बल्कि बेटा-बेटी में भेदभाव के लिए व्यवहार को मिटाने की आवश्यकता है, जिससे परिवार में सुख-समृद्धि व शांति रहती है। इस

वैदिक सत्संग मण्डल, यज्ञ समिति व भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित 'बेटी बचाओ अभियान' का दृश्य- केसरी।

अवसर पर सत्संग मंडल द्वारा कन्या भ्रूण हत्या महापाप के विरुद्ध संदेश देते हुए कलैण्डर जारी किया, जिसमें ओउम् व गायत्री मंत्र का चित्र भी है।

इस अवसर पर बालिकाओं को सम्मानित किया गया। बेटियों ने आत्मरक्षा को सीखे गये लाठी चलाने का प्रदर्शन भी प्रस्तुत किया। मुख्यातिथि कृष्णलाल डोगरा को भी समाज सेवा के लिए सम्मानित किया गया। विजय आर्य ने मंच का कुशल संचालन किया।

पं0 रमेशचन्द्र कौशिक व पं0 जयभगवान आर्य ने मधुर भजनों की प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम में लाला प्रकाशवीर, श्रीभगवान आर्य, रमेश सैनी, योगाचार्य रामनिवास योगार्थी, सूर्यप्रकाश, सुरजीत, रामनिवास कोट, सूबेदार भरतसिंह, रतीराम, मा0 पनसिंह आदि भारी संख्या में महिला पुरुष उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- आर्यसमाज, ए-ब्लॉक, प्रशांत विहार, लुधियाना का उत्सव 15 से 21 दिसम्बर तक हुआ।

(सोहनलाल मुखी, मंत्री)

- आर्यसमाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 से 30 नवम्बर तक आयोजित हुआ।

(डॉ. विजय सरीन, प्रधान)

- आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी का उत्सव व श्रीराम कथा 17 से 21 दिसम्बर तक सम्पन्न। आचार्य शशिकांत शास्त्री व कुलदीप आर्य ने की अमृत वर्षा।

(सुशील आर्य, मंत्री)

- गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोलाझाल, मेरठ का उत्सव 5 से 13 जनवरी 2015 में सम्पन्न। वैदिक वांग्मय में देवताओं का स्वरूप विषय पर हुई संगोष्ठी।

(स्वामी विवेकानन्द सरस्वती)

वेदों के पठन-पाठन से होगा समग्र कल्याण

धूमधान से मना आर्य समाज धामावाला का वार्षिकोत्सव

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून।

आर्य समाज धामावाला देहरादून का वार्षिकोत्सव यज्ञ की पूर्णाहुति भजन एवं वेद व्याख्यानों से सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल आचार्य ब्रजेश जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ जिसमें गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों ने वेद मन्त्रों का समवेत पाठ किया। यज्ञ के पश्चात आर्य जगत के प्रसिद्ध व प्रभावशाली युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी के भजनों का कार्यक्रम हुआ। उन्होंने अनेक प्रभावशाली भजन सुनाने के साथ ओजस्वी वाणी में वेद प्रवचन भी किया। उनका एक भजन **"नौजवानों उठो जाति को बचाने के लिए नाद वेदों का जमाने में बजाने के लिये''** अत्यन्त प्रभावशाली एवं रोमांच उत्पन्न करने वाला था।

इस अवसर पर आयोजित सत्संग में यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ब्रजेश जी का आत्मा को उद्बुद्ध करने वाला प्रवचन हुआ। उन्होंने यज्ञ में स्वस्ति वाचन के मन्त्रों का उल्लेख किया और एक मन्त्र **'स नः पितेव सूनवे अग्ने सुपायनों भव सचस्वा न स्वस्तये।'** का उल्लेख किया और उसके अर्थों पर प्रकाश डाला।

विद्वान वक्ता ने कहा कि यदि हम वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लें तो हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। कहा जाता है कि परमात्मा का मिलना कठिन है परन्तु वेदों को पढ़ने से यह सिद्ध होता है कि परमात्मा का मिलना सरल है। उन्होंने कहा कि वेदों का न पढ़ना मनुष्य को असुर बनाता है। वेदों को पढ़ने से मनुष्य की उन्नति होती है और वह देवता बन जाता है। उन्होंने कहा कि अपने परिवार में दैनिक यज्ञ करने से मनुष्य देव कोटि का मनुष्य बनता है जिस पर ईश्वर की कृपा बरसती है। उन्होंने असुर का अर्थ बताते हुए कहा कि जिस मनुष्य के मन व आत्मा में विचार कुछ और होते हैं और वह कर्म उनसे भिन्न प्रकार के अर्थात् उलटे करता है वह असुर कहलाता है। वेद मन्त्र में ईश्वर को सूपायनो कहा गया है जिसका अर्थ है कि ईश्वर सरल उपायों से प्राप्त होता है।

उत्सव में प्रवचन करते हुए श्री आदित्य योगी ने कहा कि ओ३म् ईश्वर का निज नाम है। उन्होने ओ३म् नाम के महत्व व विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सुख का उपभोग करना मानव की प्रकृति व प्रवृत्ति है। मनुष्य से इतर सभी प्राणी भी सुख का भोग करने की प्रवृति रखते हैं। जिसका सब लोग निर्विवाद रूप से उपयोग व उपभोग करना चाहते हैं वह सुख कहलाता है।

आर्य जगत की विदुषी व द्रोणस्थली गुरूकुल की आचार्या डॉ.अन्नपूर्णा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि अच्छे विचारों व अच्छे विद्वान लोगों की संगति से ही मनुष्य का जीवन बनता है। उन्होंने कहा कि वेदों के मन्त्र हमें नित्य प्रति जीवन को ऊंचा उठाने की शिक्षा व प्रेरणा देते हैं। जिस ज्ञान के द्वारा शिष्यों में जागृति पैदा की जाती है उसका नाम वेद है। उन्होंने एक वेद मन्त्र का उच्चारण कर कहा कि ईश्वर हमें कल्याण मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। 5 महायज्ञों से ईश्वर हमें कभी अलग न होने दे। हम विद्वानों की संगति से कभी अलग न हों। ईश्वर ने हमें हमारा शरीर यज्ञ करने के लिए दिया है। हमें अपने शरीर से परोपकार सेवा व महान कार्यों को करना चाहिये।

उनके बाद द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल देहरादून की ब्रह्मचारिणियों ने एक समवेत भजन भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का बहुत ही कुशलता से संचालन अजयवीर तथा बहिन प्रोमिला आर्या ने किया।

आर्यसमाज हैल्पलाइन

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आप सब प्रबुद्धजनों व आर्यसमाज की सेवा में आर्यसमाज हैल्पलाइन (वेबसाइट व टोल फ्री नम्बर) प्रकल्प स्थापित किया जा चुका है, जो आगामी कुछ महीनों में ही आपके सामने होगा, जिसके अन्तर्गत गुरुकुलों, गोशालाओं, आर्य समाज मन्दिरों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य भजनोपदेशकों, आर्य अनाथालय व आर्य शोध संस्थाओं, आर्य लेखकों, आर्य समाज के बलिदानियों, आर्य जगत के साधु संन्यासियों, परिव्राजकों, प्रचारकों के नाम, पते विवरण के साथ-साथ आर्य समाज की लगभग हर विषय वस्तु विभिन्न उपागमों का समावेश शामिल है

आज भी एक बहुत बड़ा वर्ग इंटरनेट से अछूता है, जिसे अब भी हार्ड कापी पढ़ने की आदत है और इस परम्परा के अपने फायदे भी हैं। कोई भी प्रचार कार्य प्रिंट मीडिया के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। प्रिंट मीडिया विचारों के प्रवाह का सशक्त माध्यम है। फिर इस कड़ी में आर्य समाज के सजग प्रहरी व श्रेष्ठ मार्गदर्शक की भूमिका निभाने वाले पत्रिका जगत को कैसे भुलाया जा सकता है? लोग आर्यसमाज हैल्पलाइन से आर्यसमाज के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

श्री सत्यपाल शास्त्री, आर्य समाज हैल्पलाइन, राम विहार कॉलोनी, गोशाला रोड, महेन्द्रगढ़ हरियाणा-123029

(दूरभाष : 09416677102)

Email : aryasamajhelpline@gmail.com

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

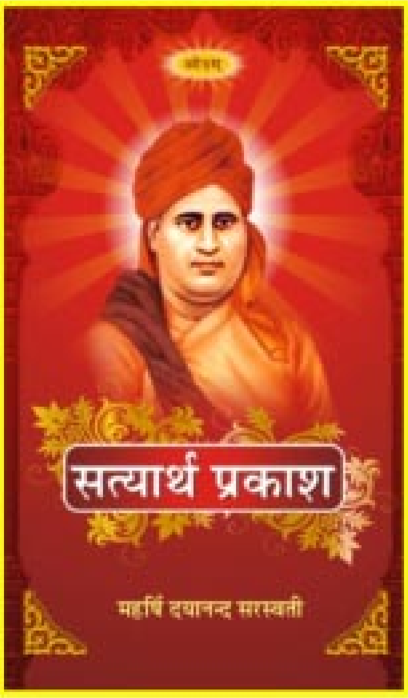

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

पहली बार लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

- ताकि आगामी पाँच वर्षों में विश्व के कोने–कोने तक उन सभी महानुभावों के घरों तक महर्षि के इस क्रांतिकारी ग्रन्थ को पहुँचाया जा सके, जो आर्यसमाजी हैं अथवा जिनकी आस्था ऋषिवर दयानन्द के विचारों में है।
- ऋषि का ऋण हम सभी पर है। इससे उऋण होने के लिए इस 'मिशनरी' योजना में आप भी अपनी पुनीत भागीदारी कर सकते हैं।
- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इसका पहला संस्करण इसी वर्ष अक्टूबर माह में ऋषि निर्वाण दिवस पर आ रहा है।

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' के अंत में प्रकाशित किये जाएंगे।

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं। कोई भी महानुभाव कम से कम रु0 500/– तथा इससे अधिक लाखों तक भेंट करके इस मिशन को गति प्रदान कर सकते हैं। न्यूनतम 1000/– रुपये या अधिक राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की उतनी ही प्रतियों में उन महानुभावों के चित्र भी छपेंगे।
- प्रत्येक आर्यसमाज न्यूनतम रु0 3100/– भेंट कर सकता है। रु0 3100/– की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी। आर्यसमाज इन प्रतियों को अपने सदस्यों के घर–घर तक पहुंचा सकता है।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/– (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/– (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/–, 3100/–, 2100/–, 1100/– या 500/– की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 व 05 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।
- सभी महानुभाओं के रंगीन फोटो तथा नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' के अन्त में उनकी धनराशि के अनुसार **'सत्यार्थप्रकाश निधि में सहयोगी दानदाता–महानुभाव'** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाएंगे, साथ ही, उन सभी महानुभावों के रंगीन चित्र 'आर्यावर्त केसरी' में भी 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि' स्तंभ के अन्तर्गत नियमित रूप से प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकार आपके पावन सहयोग की कीर्ति विश्व भर में कहीं भी गुंजायमान हो सकेगी।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 18 प्वाइंट (सभी आयुवर्ग के महानुभावों द्वारा सुगमतापूर्वक पठनीय)
5. सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ के अन्दर 'प्रेमोपहार' की एक पट्टिका रहेगी, जिसका उपयोग किसी को उपहार स्वरूप निःशुल्क भेंट करने के लिए किया जा सकेगा। उस पट्टिका पर पाने वाले तथा भेंटकर्ता के नाम व पते के लिए स्थान रिक्त रहेगा।
6. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे, जैसे– ■ महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि, बोधप्राप्ति स्थल; शिवालय व अन्य सम्बन्धित स्थलों के चित्र– टंकारा। ■ महर्षि दयानन्द दीक्षास्थली– मथुरा। ■ आर्य समाज– कांकरवाड़ी, मुम्बई। ■ पाखण्डखण्डिनी पताका स्थली (वैदिक मोहन आश्रम), हरिद्वार ■ राजा जयकिशनदास की कोठी, मुरादाबाद ■ नवलखा महल, उदयपुर ■ वैदिक यंत्रालय, अजमेर ■ महाराजा जोधपुर का महल, जोधपुर ■ महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, भिनाय कोठी, अजमेर आदि के चित्र।
7. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/– प्रति ग्रन्थ होगा।

उपर्युक्त के सन्दर्भ में आपके बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

: सभी आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन :

■ प्रत्येक आर्य समाज व आर्य परिवारों के घर पर 'सत्यार्थ प्रकाश' होना चाहिए, ताकि हमारे बच्चे भी सरलतापूर्वक महर्षि की विचारधारा से परिचित हो सकें। ■ शुभ विवाहों, जन्मोत्सवों, वैवाहिक वर्षगांठों, सेवानिवृत्ति, उद्घाटन, शिलान्यास व ऐसे ही अन्य अवसरों पर पुरस्कारस्वरूप 'सत्यार्थप्रकाश' भेंट करें। ■ विविध प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के माध्यम से 'सत्यार्थप्रकाश' घर–घर पहुंचाएं तथा विभिन्न संस्थानों, स्कूल–कालेजों व पुस्तकालयों को अपनी ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' निःशुल्क अथवा सशुल्क भेंट करें।

: अनुरोध :

➔ कृपया 'सत्यार्थ प्रकाश' की प्रतियों के अपने ऑर्डर्स अभी से बुक कराकर इस प्रकाशन महायज्ञ में अपनी ओर से पावन आहुति प्रदान करें।

➔ कृपया अपना ऑर्डर निम्न पते पर भेजें तथा सहयोग/ राशि भी इसी पते पर भेजकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' को जन–जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य करें/ करवाएं। सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' अमरोहा के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडिकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या : 88222200014649 में भी सीधे जमा करायी जा सकती है। इसकी सूचना पत्र अथवा चलभाष द्वारा हमें अवश्य दें। ताकि यथासमय पावती रसीद आपकी सेवा में प्रेषित की जा सके। धन्यवाद,

: विशेष :

कोई भी धनराशि अग्रिम भेजना ही आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित कर दिये जाएंगे। धन्यवाद

पता– 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन निधि (द्वारा – डॉ. अशोक कुमार आर्य)

आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज, अमरोहा–244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, 09758833783, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

विश्व भर में योग-क्रान्ति

संयुक्त राष्ट्र द्वारा '21 जून' अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित

संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में अपने भाषण में योग दिवस का सुझाव दिया था। जिस तरह योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को 175 देशों का समर्थन मिला, वह अपने आप में एक रिकार्ड है। प्रधानमंत्री मोदी ने योग को दुनिया के नाम भारत का उपहार करार दिया था और योग को जलवायु परिवर्तन के हल की तरह पेश किया था।

इससे पहले भारत की ही पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 15 जून 2007 को प्रस्ताव पारित कर हर वर्ष दो अक्टूबर के दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया था। महात्मा गांधी के बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योग को स्वीकृति मिलना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। योग भारत के लिए कोई नया नहीं है। यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'युज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ जोड़ना या मिलाना होता है। यह शब्द प्रक्रिया और धारणा बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिन्दू धर्म में ध्यान प्रक्रिया से संबन्धित है। योग शब्द भारत से बौद्ध धर्म के साथ चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका तक फैल गया। श्रीमद् भगवत गीता में भी योग शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है। कभी अकेले और कभी किसी के साथ जैसे बुद्धि योग, संन्यास योग, कर्म योग।

महर्षि पतंजलि को योग का प्रणेता माना जाता है। उनका योग दर्शन जन सामान्य के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। भारत में जिन्होंने योग किया, वे योगी कहलाये। भारत में अनेक योग गुरु हुए। श्री अयंगर और बाबा रामदेव को इससे बड़ी ख्याति मिली। अब योग का ब्राण्ड एम्बैसडर हो गया। योग अंग्रेजी में योगा होकर पैकेजिंग हो गया। न्यूयार्क, वाशिंगटन, ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों से लेकर एशियाई देशों के लोगों ने इसे अपनाया। आज ब्रिटेन से लेकर बर्मा तक की जेलों में कैदियों का तनाव कम करने के लिए योग की मदद ली जा रही है। योग कैदियों के जीवन का हिस्सा बन गया। स्वीडन की जेल प्रणाली में एक राष्ट्रीय योग संयोजक की नियुक्ति की जाती है। बाकी चीजों के अलावा उसकी जिम्मेदारी जेल के पहरेदारों को योग शिक्षक बनाना भी होती है।

महर्षि पतंजलि ने लिखा है कि चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। मृत्यु दुख से छूटने और आनन्द को प्राप्त करने का साधन योग ईश्वर की उपासना करना है। योग वह क्रिया या साधन है, जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा से जा मिलती है। योग का अर्थ समाधि है। कुशलतापूर्वक काम करना ही योग है। योग मुक्ति प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इससे मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास होता है। इससे विभिन्न रोगों से छुटकारा मिलता है।

बातें अनेक : उत्तर एक

डॉ0 रुद्रदत्त चतुर्वेदी
पूर्व विभागाध्यक्ष- मनोविज्ञान

बात शुरू करता हूं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति लै0ज0 जमीरूद्दीन शाह के एक कथित विवादास्पद बयान से, जिस पर मीडिया ने बखेड़ा खड़ा कर दिया और स्वाभाविक तथ्य ओझल हो गया। साथ ही और भी ऐसे अनेक प्रकरणों पर चर्चा करना समीचीन होगा, जिन्हें दृश्यमीडिया ने अनुचित रूप से बतंगड़ बनाया है और बखेड़ा खड़ा किया।

अपनी चर्चा से पूर्व दो–तीन प्रत्यय (कंसैप्ट्स) स्पष्ट करना भी आवश्यक समझता हूँ। शब्द अक्षरों से बनते हैं और अक्षर का अर्थ है, अ=नहीं, क्षर= नष्ट होने वाला। अर्थात् अक्षर से बने शब्द का प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता। दूसरी बात हम सबने हिन्दी, अंग्रेजी की परीक्षाओं में एक प्रश्न का सामना अवश्य किया होगा– संदर्भ सहित अर्थ बताइए या व्याख्या कीजिए। बिना संदर्भ (विदाउट रेफरेन्स) चर्चा करना विवाद पैदा कर देता है और अनर्थ भी। तीसरी बात हर शब्द का अर्थ अलग–अलग होता है, समान तो लग सकता है परन्तु वही छाप नहीं छोड़ता। अब करते हैं प्रकरणों पर चर्चा :

1–अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति (लै0ज0 अवकाश प्राप्त) जमीरूद्दीन शाह का एक संदर्भ विशेष में कहा गया एक कथन है कि एक लड़की के पीछे चार लड़के पुस्तकालय में आवेंगे। ज्ञातव्य है, कि मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पी0जी0 पुस्तकालय में लड़कियों को पढ़ने आने की अनुमति है। यह एक सच्चा मनोवैज्ञानिक कथन (स्टेटमेंट) था, जिसे "जी न्यूज चैनल" के सुमित अवस्थी ने टिप्पणी (कमेंट) बताकर प्रचारित किया। अगर वह टी0वी0 चैनल उसे कथन कह देता तो उस शाम की चर्चा (चवाब चिट्ठा) चौपाल के लिए चटपटा विषय क्या होता? वैसे भी सुमित अवस्थी अनेक राजनीतिज्ञों और विद्वानों से चैनल पर बार–बार क्षमा मांगने का आग्रह या दुराग्रह करते रहे हैं। क्यों– ये वे किसी मनोचिकित्सक से स्वयं पूछ लें तो अच्छा होगा। उन्होंने अनेक विद्वानों को जलील करने का प्रयास किया और अंत में एक छात्र नेता से जो छलछद्म से दूर होता है घुमा फिरा कर मनचाही टिप्पणी प्राप्त कर ली।

कुलपति का कथन सामान्य था, मनोवैज्ञानिक सत्य था, परन्तु टी0वी0 चैनल ने उसे टिप्पणी (कमेंट) और वह भी स्त्रीविरोधी कमेंट घोषित करने में, समय की हवा को देखते हुए, सफलता प्राप्त कर ली।

2– केन्द्रीय शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा किसी ज्योतिषी से परामर्श लेने को उछाला गया। यह किसी के व्यक्तिगत जीवन में घुसपैठ थी और वह भी एक स्त्री का इज्जत उछालू कार्यक्रम था।

कृपया अवगत हों कि ज्योतिष एक संभावना विज्ञान (साइंस आफ प्रोबेबिलटी) है। कैसी अजीब बात है कि यदि डाक्टरी उपचार असफल हो तो डाक्टर अज्ञानी और ज्योतिषीय भविष्यवाणी गलत हो तो पूरी विद्या बकवास। यह दोहरा मापदंड क्यों? किनके द्वारा?

3– एक दिन स्त्रियों के उत्पीड़न पर टी0वी0 चर्चा चल रही थी कि कम कपड़े आकर्षण पैदा करते हैं। स्त्री पक्ष का तर्क था कि छोटी बच्चियों के प्रकरण में क्या कहेंगे। यहाँ भी शब्द ज्ञान के अभाव में अपनी जिद मनवाने का कुतर्क है।

(i) स्त्रियों के अर्धनग्न शरीर के प्रति आकर्षण एक सामान्य (नौरमल) व्यवहार है। यदि ये कथित प्रगतिशील टी0वी0 महिलायें विपरीत लिंगी आकर्षण (अपोजिट सैक्स अट्रैक्शन) के प्राकृतिक सिद्धान्त को झुठलाती हैं तो फिर कुछ कहने को शेष ही नहीं रह जाता।

(ii) बलात्कार एक असामान्य व्यवहार (ऐबनारमल विहेवियर) है तथा बच्चियों से बलात्कार एक मानसिक विकृति है। अतः एक ही डंडे से हांकना उचित नहीं है। उसी बहस में एक जानी–मानी हस्ती कमला भसीन ने उन्हीं स्त्रियों से पूछा था कि प्रत्येक सीरियल में जब मर्द कपड़े यहाँ तक कि सूट पहिनते हैं, तो नग्न महिलाओं को क्या ठंड नहीं लगती? यह थोड़े शब्दों में बड़ी बात है।

हमें इन बिन्दुओं पर विचार करना चाहिए तथा भारतीय सभ्यता व संस्कृति की उत्कृष्टता के अनुरूप समाज के नव निर्माण पर ध्यान देना चाहिए। वस्तुतः सामाजिक विद्रूपताएं विसंगतियों को जन्म देती हैं, जिनका निराकरण आवश्यक है। –सम्पादक

संध्या करने से बनते हैं देवता

सुमन कुमार वैदिक

प्रात:काल का कितना सुहावना समय है। उस समय से परमात्मा ने वेदमंत्रों को उच्चारण करने का सुअवसर दिया। ब्रह्म मुहुर्त में उठने तथा रात्रि में जल्दी जाने वाले बलवान, धनवान और बुद्धिमान होते हैं, जबकि देर रात तक सोने वालों के तेज, बल, पराक्रम को उगता सूर्य हर लेता है। तभी तो कहा जाता है-

हर रात के पिछले पहर में,
यहां दौलत लुटती रहती है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।

प्रात: जागरण के वेदमंत्र पाठ से हम अमृत को पान करते हैं, जिसके मंत्र "प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवम्।।" आदि, जिनका विवरण आपको वैदिक यज्ञों की पुस्तक में सुलभ है। इस आरम्भ के मंत्र में ही प्रातरग्नि आ रहा है, जिसमें साधक कहता है कि हे प्रात:काल की अग्नि! तू हवि है। तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों को पान करा, जिससे हम देवता बन जाएं और देवता गणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को कुछ विचारें। हमारी विचारधाराएं हर स्थान में देववृत्ति की बनी रहें। देवता जन सदैव दूसरों को कुछ देते हैं। अपनी त्रुटियों को छोड़कर दूसरों के गुणों को धारण करते हैं। दूसरों की निन्दा नहीं करते। आत्मा की व्याहृतियों को जानने वाले तथा दूसरों के कल्याण की भावना जिनके हृदय में रही है, वे ही देवता कहलाए हैं। प्रात:काल की संध्या वेला में आर्यजन संध्या करते हैं। प्रभु का गुणगान गाते हैं कि "परमात्मा! तू कल्याण करने वाला है, तूने हमारे कल्याण के लिए अनेक सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं। हे इन्द्र (परमात्मा) इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। आपने प्रात:काल मे सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार की हम उस महान ज्योति को चाहते हैं, जिससे हमारा आत्मिक कल्याण हो। वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियां हैं। उसे जानकर संध्या हमारा वास्तव में कल्याण करा देती है।' 'जब देवता संध्या के द्वार पर जाते हैं, तो संध्या पुकार कर कहती है कि हे देवताओं! यदि तुम मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो तुम संसार में देवता बन जाओगे, और यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार से ठुकराए जाओगे।

हम इस अग्नि को लेकर ऊर्ध्वगति को प्राप्त हों। सूर्य की प्रात: की किरणों को लेकर, उसके तेज को लेकर गति करने वाले बनें। जिसका एक-एक परमाणु हमें ओजस्व, तेजस्वी बना रहा है। संध्या की वेला में परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए संसार सागर से पर हो जाएं। (लेख ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के योगमुद्रा में दिए गए प्रवचनों पर आधारित है)।

आवश्यक सूचना

पं. उमाकांत उपाध्याय स्मृति विशेषांक

आर्य संसार के सम्पादक राजेन्द्र जासवाल के अनुसार आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान तथा 'आर्य संसार', कोलकाता के सम्पादक पं. उमाकांत उपाध्याय की स्मृति में आर्य संसार द्वारा फरवरी 2015 का अंक स्मृति विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

यदि आर्य समाज स्थापित न होता तो क्या होता?

मनमोहन कुमार आर्य

इस समय वेद व सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,115 आरम्भ हो रहा है। द्वापर युग की समाप्ति पर लगभग 5,000 वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। इस प्रकार लगभग 1,96,08,48,000 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध तक सारे भूमण्डल पर एक ही वैदिक धर्म व संस्कृति विद्यमान थी।

महाभारत युद्ध से धर्म व संस्कृति का पतन आरम्भ होता है जो अब से 139 वर्ष पूर्व अपनी चरम पर था। इस समय वैदिक धर्म व संस्कृति का मूल स्वरूप अप्रचलित व अज्ञात हो गया था तथा उसके स्थान पर अन्धविश्वास, कुरीतियां, अज्ञान ने सर्वत्र अपने पैर पसारे हुए थे। निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना न केवल ऐतिहासिक वस्तु बन कर तिरस्कृत हो चुकी थी, अपितु विस्मृत भी कर दी गई थी। देशवासियों को पता ही नहीं था कि कभी देश के शत–प्रतिशत लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर के निराकार व सर्वव्यापक स्वरूप की योग दर्शन की विधि के अनुसार उपासना करते थे, अंहिसात्मक अग्निहोत्र यज्ञ करते थे, जीवित माता–पिता व वृद्धों का श्राद्ध व तर्पण होता था, मांसाहार वर्जित था, मदिरापान बुरा माना जाता था, आज जैसा स्त्री–पुरूषों का फैशन तो कभी इस भारत भूमि पर पूर्व में था ही नहीं। जब भारत में पतन की यह स्थिति थी तो इसका प्रभाव सारे विश्व पर पड़ना स्वाभाविक था। कारण यह कि मनुस्मृति के अनुसार यह देश अग्रजन्मा मनुष्यों को उत्पन्न करता था। संसार भर के लोग अपने–अपने लिये धर्म, संस्कृति, चरित्र व ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा लेने इसी देश में आया करते थे। भारत संसार का गुरू था। महाभारत युद्ध के पश्चात जब भारत के लोगों ने विश्व में धर्म–संस्कृति–चरित्र–ज्ञान व विज्ञान की शिक्षा देने के लिए चारों दिशाओं के देशों में जाना बन्द कर दिया या यह कहें कि विदेशों में जाना बन्द हो गया तो वहां घोर अन्धकार फैल गया। ऐसी स्थिति में भारत से बाहर प्रथम पारसी मत का उदय हुआ। इसके प्रचारक व संस्थापक महात्मा जरदुश्त थे। पारसी मत का धर्म पुस्तक जन्दावस्था है। क्या जन्द शब्द छन्द का अपभ्रंस तो नहीं है? जन्दावस्था वेदों से अधिकांशतः प्रभावित है। इसके बाद ईसा का जन्म होने पर उन्होंने अपने प्रयासों से धर्म–संस्कृति का अध्ययन किया, सोचा व विचारा। वह जितना अध्ययन कर सके, उनके अनुरूप उनके शिष्यों द्वारा क्रिष्चियनिटी या ईसाई मत का प्रादुर्भाव हुआ। स्वाभाविक था कि

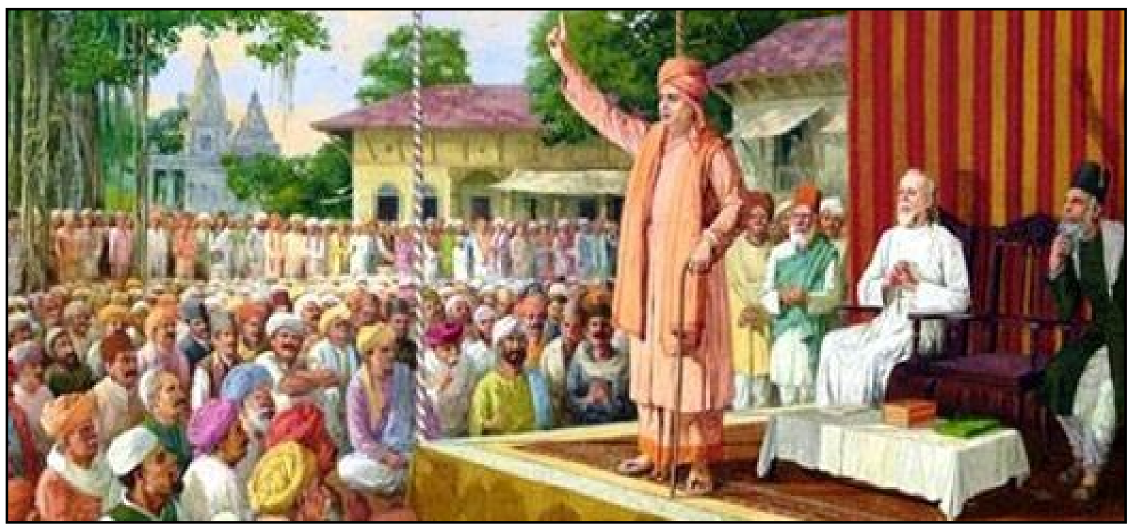

धर्मविहीन हो चुके मनुष्यों को धर्म की आवश्यकता थी। अपनी अज्ञानता के कारण जनसाधारण को जो व जैसा ज्ञान मिला उसे उन्होंने स्वीकर कर लिया। उस समय वहां के लोगों के लिए यह सम्भव नहीं था कि वह अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग कर सत्य व असत्य को जान पाते। यह मत भी पल्लवित व पोषित होता रहा। हमें अनुभव होता है कि इस मत ने ईश्वर व जीवात्मा का जो स्वरूप प्रस्तुत किया वह ईश्वर व जीवात्मा के सत्य व यथार्थ स्वरूप से भिन्न है।

आज यद्यपि ज्ञान– विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है, परन्तु धर्म– मत– सम्प्रदायों– मजहबों के सिद्धान्त व मान्यतायें अपरिवर्तनीय बनी हुई हैं, अतः यह वैसी की वैसी हैं। आज कुछ आधुनिकता, ज्ञान की उन्नति व आर्य समाज के वेदों के प्रचार से प्रभावित होकर उनकी तर्क व युक्तियों से युक्त व्याख्यायें करने का प्रयास किया जाता है। यह यद्यपि अच्छा है परन्तु हम अनुभव करते हैं कि सभी मतों व धर्मो की एक–एक बात का बहुत ही गहराई से विचार कर निर्णय करना चाहिये और यदि कोई बात असत्य व अव्यवहारिक सिद्ध हो तो उसे आधुनिक सत्य ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में संशोधित कर लेना चाहिये। अनावश्यक खींच–तान नहीं करनी चाहिये। हमारे वैज्ञानिक लोग भी निरन्तर ऐसा करते आ रहे हैं जिसका परिणाम व प्रभाव यह है कि आज विज्ञान आकाश छू रहा है जो कि 100 या 200 वर्ष पहले अपनी शैशवावस्था में था। इसके विपरीत आज विगत 4 से 5 हजार वर्षो में उत्पन्न मत व मतान्तर जहां थे, वहीं के वहीं हैं। उनमें संशोधन का विचार करना भी पाप व अपराध माना जाता है। महर्षि दयानन्द इस धारणा के विरूद्ध रहे हैं। उन्होंने प्रत्येक बुद्धि के विपरीत बात का संशोधन किया है और आज का वैदिक धर्म शायद् संसार के बनने के बाद से इस समय सर्वोत्तम मान्यताओं व सिद्धान्तों से समन्वित है। भ्रम न हो इस लिये यह कहना है कि हमारे देश में महाभारत काल तक ऋषियों की परम्परा रही है। हमारे ऋषि अवैदिक कार्यो का आरम्भ से ही विरोध करते रहे हैं। परन्तु कितना भी करें कहीं कुछ थोड़ा ऐसा हो जाता है जो सिद्धान्त के पूर्णतः अनुकूल नहीं होता। उसका कारण उसका व्यवहार करने वाले लोगों का अज्ञान व किंचित स्वार्थ भी होता है। समय का चक्र चला और अरब कहलाने वाले देशों में मक्का नामक स्थान पर मोहम्मद साहब से इस्लाम मत अस्तित्व में आया, जो समय–समय पर उनके अनुयायियों के अंहिसा व हिंसा समन्वित प्रचार से विश्व के अनेक स्थानों पर फैल गया। यह स्थिति तो भारत से दूर के देशों की रही है। भारत में भी पहले यज्ञों में पशु हिंसा आरम्भ हुई। वर्ण व्यवस्था में गुण, कर्म व स्वभाव से चार वर्ण थे जिनमें एक वर्ण शूद्र था। सबको उन्नति के समान अवसर सुलभ थे। छुआ–छूत व अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराई वैदिक काल में नहीं थी। परन्तु मध्य काल में इसका उदय हुआ। इसके कुछ कारण अवश्य रहे होंगे। आज सारा विवरण उपलब्ध नहीं है। इतना ही कह सकते हैं कि जन्म से किसी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र मान लेने की व्यवस्था वेदों के विरूद्ध होने से गलत थी। इसके साथ ही शूद्रों के प्रति छुआ–छूत का व्यवहार घोर अमानवीय कार्य था व आज भी है यदि कोई ऐसा करता है। ऐसे लोगों का मनुष्य जन्म धारण करना सार्थक व उद्देश्य को पूरा करने वाला नहीं कहा जा सकता। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया। इसका एक कारण यह हो सकता है कि हमारे ब्राह्मण व पण्डित कहलाने वाले वर्ग ने स्वयं तो वेदों व शास्त्रों का अध्ययन करना बन्द कर दिया व दूसरों को भी इसके अधिकार से वंचित कर दिया। ऐसे अनेक कारणों के उत्पन्न होने से भारत में बौद्ध मत व उसके साथ या बाद में जैन मत का प्रादुर्भाव हुआ। इन्होंने न केवल यज्ञों की ही उपेक्षा व विरोध किया अपितु ईश्वर के अस्तित्व को ही अस्वीकार कर दिया। इसके स्थान पर एक अवैदिक कार्य यह प्रचलित किया गया कि इन मतों के आचार्यों ने अपने मान्य पुरूषों की मूर्तियों को बना कर उनकी पूजा व अर्चना आरम्भ कर दी। सस्ता सौदा ज्यादा बिकता है। अतः वैदिक व पौराणिक मत के लोग अपना मत छोड़ कर इन नये नास्तिक व वैदिक परम्पराओं का विरोध करने वाले मतों की ओर दौड़ने लगे जिससे इन नये मतों के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी और वैदिक व पौराणिक मत के अनुयायियों की संख्या घटने लगी। इसके बाद स्वामी शंकराचार्य जी का समय आता है।

स्वामी शंकराचार्य जी भारत के दक्षिण प्रदेश में जन्में। बहुत कम आयु में ही उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लिया। उनके काल में जैन मत अपना प्रसार प्राप्त कर चुका था। आर्यधर्म व उसका अज्ञान समन्वित रूप अवनत अवस्था को प्राप्त था। उन्होंने सनातन धर्म की जब यह अवस्था देखी तो उनमें भी धर्म रक्षा का भाव आया। उन्होंने जैन मत की मान्यताओं व सिद्धान्तों का अध्ययन किया तो उन्हें सत्य की कसौटी पर असफल पाया। उन्होंने इनके पराभव व आर्यधर्म की उन्नति पर विचार किया। उन दिनों देश की राजधानी उज्जैन में शासन कर रहे राजा जैन मत के अनुयायी थे। उनसे मिलकर उन्होंने उन्हें अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों का परिचय कराया और उन्हें समझाया कि राजा का कर्तव्य है कि वह सत्य धर्म की उन्नति के लिए विद्वानों में शास्त्रार्थ की व्यवस्था करे और जो मत शास्त्रार्थ में सत्य सिद्ध हो उसे स्वयं भी स्वीकार करे और प्रजा से भी कराये। राजा सुधन्वा उनके विचारों से सहमत हो गये, शास्त्रार्थ हुआ। जैन मत पराजित हुआ तथा स्वामी शंकराचार्य का अद्वैतमत विजयी रहा। राजा ने अपना कर्तव्य मानकर जैन मत को छोड़कर स्वामी शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित आर्य धर्म के उनके अद्वैत–स्वरूप को स्वीकार किया। उसके बाद देश भर मे बौद्ध व जैन मत पराभूत हुआ और एकेश्वरवाद का प्रतिपादक अद्वैत मत प्रवर्तित हुआ। स्वामीजी ने देश के चारों दिशाओं में धर्म प्रचारार्थ चार मठ स्थापित किये जो आज भी संचालित है। इस घटना के बाद बौद्ध व जैन मत के प्रभाव व जनसामान्य की अविवेकपूर्ण रूचि के अनुसार तथा स्वामी शंकराचार्य जी के समान गम्भीर विद्वानों व प्रचारकों की अनुपस्थिति के कारण मूर्तिपूजा आदि अवैदिक मान्यताओं से युक्त आर्यधर्म प्रचलित रहा व इसमें दिन–प्रतिदिन अन्धविश्वास व पाखण्डों की वृद्धि होती रही। इसके बाद के समय में मूर्ति पूजा को महिमामण्डित करने के लिए पुराणों की रचना भी हुई और देश वेद के सत्य मार्ग से हट कर मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अस्पृश्यता, बाल विवाह, बेमेल विवाह, मांसाहार, मदिरापान जैसी अनेक बुराईयों का प्रचलन होकर समाज दिन प्रतिदिन अवनति को प्राप्त होता रहा। इस सबके परिणाम स्वरूप 8–वीं शताब्दी में पहले भारत यवनों का व बाद में अंग्रेजों का गुलाम बना। इन दिनों भारत में आर्य धर्म के अनुयायियों का न धर्म सुरक्षित रहा न मान–मर्यादा और न आत्म–सम्मान ही। इतनी जलालत देखनी पड़ी की जलालत को भी शर्म आ जाये। इन सभी विदेशी विधर्मी लोगों ने जो कुछ किया वह मानवता के विरूद्ध था तथा अपवादों को छोडकर, पाश्विक प्रवृति के अमानवीय कार्यो की श्रेणी में आता है।

अंग्रेजों ने भारत को स्वतन्त्रता अपनी इच्छा से प्रदान नहीं की। भारत को स्वतन्त्र करना उनकी मजबूरी थी। आज भी उन्होंने कुछ थोड़े से देशों को गुलाम बना रखा है, ऐसी जानकारी नैट पर उपलब्ध है। वह कौन सी मजबूरी है जिस कारण अंग्रेजों को भारत को स्वतन्त्र करना पड़ा तो हमें लगता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों के कारण उनको भारत से जाने का निर्णय करना पड़ा। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भी कम चुनौती नहीं दी। हमारे क्रान्तिकारियों ने भी अंग्रेजों की नींद हराम कर रखी थी। वह जान चुके थे कि अंहिसात्मक आन्दोलन का सीमित प्रभाव है परन्तु क्रान्तिकारी तो उनके बड़े–बड़े अधिकारियों तक के प्राण ले रहे थे।

अगले अंक में क्रमश:

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा क्रान्तिकारी विचारों की मौलिक झलक

पं0 उम्मेद सिंह विशारद

युगों के उपरान्त अठारवीं शताब्दी में इस धरती पर देव दयानन्द ऐसे महान सुधारक थे, जिन्होंने सभी समाज सुधारकों को पीछे छोड़कर एक नयी वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया। उन्होंने अद्‌भुत साहस दिखाकर धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरूतियों पर जोरदार प्रहार किया। ऐसे कठिनतम कार्य को तो एक ऋत देवता ही कर सकता था।

भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण बात पायी जाती है कि जिन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति के जीवन को पलट दिया, वे आबाल ब्रह्मचारी रहे हैं। ऋषि दयानन्द आदित्य ब्रह्मचारी थे। स्वामी शंकराचार्य आबाल ब्रह्मचारी थे। स्वामी विवेकानन्द भी आबाल ब्रह्मचारी थे। इन महापुरूषों के विचारों ने भारत के कोने–कोने को व्याप लिया था। अपने–अपने समय में महान कार्य किया और एक दूसरे से कड़ी जोड़न का कार्य किया। ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्य में भी इस देश का कर्णधार वही हो सकेगा, जो आबाल ब्रह्मचारी रहकर देश की चुनौतियों को स्वीकार कर चैलेन्ज करेगा।

देखने में आया कि महर्षि दयानन्द जी ने समकालीन व जिन कुरीतियों के संस्कार भारत के नर–नारी में खून के एक–एक कतरे में समा गये थे, उन पर प्रहार किया, जिनकी जड़ें बहुत गहरी चली गयी थीं। यह अपने आप में सर्वोच्च महान कार्य था, आइए विचार करते हैं।

1. **धार्मिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार**–भारत का धर्म वेदों से बंधा हुआ था और नर–नारी में वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा थी और हिन्दू धर्म की आधारशिला वेद थे। हिन्दु लोग वेदों से इधर–उधर नहीं जा सकते थे। किन्तु दयानन्द से पूर्व वेदों के विद्वानों ने वेदों के अर्थ का अनर्थ किया हुआ था, उनमें सायणाचार्य महीधर, मेसिमूलर जेकोजी, शंकराचार्य आदि ने वेद मंत्रों का इतिहास परक अर्थ करके सम्पूर्ण समाज को गहरे अंधेरे कुएं में डाल दिया था। उन्होंने प्रचलित किया कि वेदों में पशुबलि है, वेदों में नारी को पढ़ने का अधिकार नहीं है। वेदों में जाति प्रथा है, वेदों में मूर्ति पूजा है। वेदों में भूत–प्रेत, जादू–टोना है। वेदों में काल्पनिक देवी–देवता हैं। वेदों मे छुआछूत है। इस प्रकार वेदों के अर्थों को अपने स्वार्थ के लिए बदल दिया गया था। भारत की भोली जनता इसका शिकार बन गयी थी।

महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थो पर प्रहार किया, उन्होंने उन मन्त्रों के अर्थों को शुद्ध करके प्रमाणित किया कि वेदों में महिलाओं व शूद्रों को पढ़ने का अधिकार है वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है, जाति व्यवस्था नहीं है, पशुबलि नहीं है। वेदों के शब्दों का सही अर्थ विज्ञान व सृष्टि क्रमानुसार करके जनता के सामने रखा और एक वैचारिक नई क्रान्ति ने जन्म लेकर सदियों से चली आ रही अन्य परम्पराओं को धराशायी कर दिया।

महर्षि दयानन्द ने धर्म के सत्य अर्थ सामने रख जमाने की दिशा ही बदल दी, जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। निरन्तर सत्य, धर्म का प्रचार करते रहने के लिए आर्य समाज क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। आर्य समाज ने सम्पूर्ण विश्व के अन्धविश्वास की चूलें हिला कर रख दीं।

2. **समाजिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार**– महर्षि दयानन्द भूत, वर्तमान तथा भविष्य को पिछले तथा अगले को मिलाकर चलना चाहते थे। उनका सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण था। यही कारण था कि सिर्फ भूत के साथ चिपटे रहने वाले रूढ़ीवाद का सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने बहिष्कार किया। वे सामाजिक कुरूतियों के स्थिरता के पक्षधर नहीं थे। किन्तु उनके समय में हिन्दू समाज नवीनता से डरता था।

वह बहुत कठिन दिन थे, किन्तु देव दयानन्द सत्य की राह से जरा भी नहीं डिगे। एक नयी सामाजिक क्रान्ति को जन्म दे दिया। ऋषि दयानन्द जी का उद्योग का परिणाम था कि समाज में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगा। स्त्रियों के प्रति जहां ''स्त्री शूद्रो नाधीयाताम'' का राग अलापा जाता था, वहां कन्याओं को पढ़ने के लिए पाठशालायें खोली जाने लगीं। शूद्रों पर शोषण वर्ती बदलने लगी। यज्ञोपवीत पहनने का सबको अधिकार मिल गया। जातीवाद, भेदभाव, छुआछूत, मृत्युभोज, काल्पनिक देवी–देवता और अनेक सामाजिक कुरूतियाँ बदलने लगीं। ऋषि दयानन्द ने जो समाज की रूप–रेखा बना दी, उसी को लेकर 20वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया। महात्मा गांधी ने उन्हीं सुधारों का अनुशरण किया।

3. **राजनैतिक क्षेत्र में प्रहार**– ऋषि दयानन्द की विचारधारा का आधार रूढ़ीवाद का उन्मूलन करना था, राष्ट्र के नेतृत्व में जिसका राज्य चला आ रहा हो, चाहे उसमें कई विकृतियाँ हों, वही ठीक है। उन्होंने उस पर भी प्रहार किया। उन्होंने कहा जब तक राष्ट्र का नेतृत्व करने वाला विद्वान, धार्मिक व सदाचारी व सादगी वाला न हो, तब तक वह कुशल शासक नहीं दे सकता है। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 8वें सम्मुलास में लिखा–अभाग्योदय से और आर्यो के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, जो कुछ भी है सो विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देश को अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। उन्होंने राष्ट्र की उन्नति के विकास में **धर्मशक्ति वेदानुकूल + राजशक्ति वेदानुकूल + ज्ञानभक्ति वेदानुकूल + और धनशक्ति वेदानुकूल** सत्य के आधार पर होनी चाहिए। इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी स्वतन्त्र भारत में स्वस्थ, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन करके भारत को पुनः जगत गुरू, धर्मगुरू, सोने की चिड़िया बनाना चाहते थे, जिसका प्रभाव वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व पर शनै–शनै पड़ने लगा है। ऐसे महान देव पुरूष को हम गर्व से भारत का पितामह कह सकते हैं।

वैदिक प्रचारक
गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून मो0–9411512019

गोवंश से बदल सकती है भारत की तकदीर

हमें भारत के गांवों में प्रायः गोबर गैस संयंत्र देखने को मिलते हैं, लेकिन इनका जैसा कुशल प्रयोग होना चाहिए, वह कम ही जगहों पर होता दिखता है। कुछ कारणों से यह संयंत्र कुछ दिनों बाद ठीक देख–रेख के अभाव में खराब हो जाते हैं लेकिन अब इन्हें अधिक कुशल बनाने में सफलता प्राप्त हो चुकी है। गैस संयंत्र उत्पादक क्षमता के लिहाज से विभिन्न आकारों में उपलब्ध है। तीन क्यूबिक मीटर से लेकर 270 क्यूबिक मीटर तक के गैस प्लांट को स्थापित करने की लागत 20,000 रू0 से लेकर एक लाख रू0 तक पड़ती है।

इन गौबर गैस संयंत्र से उत्पादित मीथेन गैस को एक कंप्रेशर की सहायता से दबाव देकर सिलिंडरों में भरने की तकनीक भी सफलतापूर्वक आजमाई जा चुकी है। इस प्रकार कंप्रेशर की सहायता से सिलिंडर में भरी मीथेन को हम एल. पी. जी. सिलिंडर की भांति अपनी रसोई या आटोमोबाइल्स या किसी अन्य ऊर्जा जरूरत के लिहाज से उपयोग में ला सकते हैं। इस प्रकार गोबर गैस बनने के बाद जो गोबर की स्लरी बचती है, उसमें फास्फोरस और नाइट्रोजन की मात्रा भरपूर होती है। देश में 20 करोड़ गाय अथवा गोवंश के गोबर से मीथेन प्राप्त करने के साथ ही उसकी स्लरी से 50 मिलियन टन अर्थात् पाँच करोड़ टन खाद भी हमें प्राप्त हो सकती है। इससे देश की कुल 14 करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि को साल में दो बार भरपूर ताकतवर खाद से पाटा जा सकता है।

जरा सोचिए, इससे उर्वरक पर देश के द्वारा खर्च को जारी कितनी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की बचत हो सकती है। दूसरे हमारे खेत रासायनिक खाद की जगह जैविक खाद से भरपूर होंगें, स्वाभाविक ही अन्न और उसके माध्यम से हमारे मन में जो रासायनिक प्रदूषण घुस गया है, वह भी दूर हो जाएगा। गांव–गांव और शहर–शहर में दूध, घी, ईंधन ही ईंधन होगा। तब कौन कहेगा

कि भारत गरीब देश है ? एक अचूक योजना बनाने और उसके त्वरित क्रियान्वयन की दिशा में पूरे देश के जुटने की देरी है कि हमारे देश का कायापलट होने में एक दशक, और यदि युवा शक्ति ने हाथ लगा दिए तो 4–5 साल में ही गांव–गरीब–किसान बेरोजागार आदि सबकी तकदीर बदल जाएगी।

हमारे देश में शहरीकरण के इस काल में भी लगभग 6.5 लाख गांव हैं। यदि हर गांव में 50 किसान परिवार औसतन हैं और यदि उनके पास 2 बैल और 4 गायें हैं तो इस पशुधन के गोबर द्वारा उत्पादित मौथेन गैसे से ही हम पूरे देश की विद्युत आपूर्ति और ईंधन जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। आज इसके लिए हम विदेशों की ओर मुंह देखते रहते हैं। भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च करने के बाद हम इस ईंधन को अभी एल. पी. जी कैरोसिन पेट्रोल, प्राकृतिक गैस आदि रूपों में विदेशों से आयात कर अपनी ऊर्जा जरूरतें पूरी कर पाते हैं। पश्चिमी देशों ने आज व्यापक पैमाने पर बायोडीजल का उत्पादन प्रारंभ कर दिया है। अब हमारे देश में भी नीम, करंज, रतनज्योत, जट्रोफा आदि का वृक्षारोपण तेल के उत्पादन के लिए किया जा रहा है। इस प्रकार 1000 जट्रोफा के पौधे जो लगभग एक हेक्टेयर भूमि में उगाये जा सकते हैं के द्वारा लगभग 10 टन तेल–बीज प्राप्त हो सकता है और इससे लगभग 2.5 टन तेल निकाला जा सकता है। इस तेल को बायोडीजल में बदलकर डीजल इंजनों को चला सकते हैं। भारत में प्रतिवर्ष डीजल की खपत लगभग चार करोड़ टन (सन् 2004 के

शेष पृष्ठ 9 पर......

संक्षिप्त समाचार

शहीदों को श्रद्धांजलि

- आर्यसमाज दक्षिण जयपुर में 23 नवम्बर 2014 को पाखंडी संत रामपाल का भंडाफोड़ करने वाले आर्य वीरों की शहादत पर दी गयी भावभीनी श्रद्धांजलि।

(ईश्वर दयाल माथुर, पत्रकार)

सार्वजनिक अभिनन्दन

- आर्यसमाज, मानसरोवर, जयपुर के उपप्रधान हिन्दी के साहित्यकार व पत्रकार ईश्वर दयाल माथुर का भारतीय जनता पार्टी वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ द्वारा सार्वजनिक अभिनन्दन। दीर्घायुष्य व सुस्वास्थ्य की मंगलकामना

(अर्जुनदेव, प्रधान)

श्रीकृष्ण निष्कलंक

- आर्यसमाज गुधनी, बिल्सी, बदायूं द्वारा आयोजित जनजागृति सम्मेलन में राष्ट्रीय वेद प्रचारक आचार्य संजीव रूप ने योगीराज श्रीकृष्ण के चरित्र को कहा निष्कलंक। कहा संस्कृति के उन्नायक थे योगिराज।

(प्रज्ञा आर्या, बिलसी)

जगाई वेद की अलख

- आर्यसमाज भिलाई नगर दुर्ग का 31 दिवसीय वेद प्रचार अभियान 24 अक्टूबर से 24 नवम्बर 2014 तक सुसम्पन्न। क्षेत्र में जगाई वेद की अलख

(रवि आर्य, मंत्री)

महायज्ञ सम्पन्न

- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल का 50वां वार्षिक महोत्सव 3 से 6 नवम्बर 2014 तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ भव्यतपूर्वक सम्पन्न।

(आचार्य चन्द्रपाल)

महोत्सव मनाया

- दयानन्द मठ चंबा का 34वां वार्षिक महोत्सव एवं दुर्लभ शारद यज्ञ 21 से 24 सितम्बर 2014 तक उत्साहपूर्वक मनाया। लोगों ने की सराहना।

(डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा)

विमोचन 24 को

- प्रोफेसर विजय कुलश्रेष्ठ-अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन 24 जनवरी को। जे.एस.एच. कालेज अमरोहा में 25 को होगी प्रोफेसर कुलश्रेष्ठ के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज, हसनपुर (अमरोहा)
प्रधान- देवेन्द्र कुमार रस्तोगी
मंत्री- नन्हे सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- रमेश चन्द्र गुप्ता

आर्यसमाज, रुद्रपुर (उ.ख.)
प्रधान- सुभाष चन्द्र आर्य
मंत्री- डॉ. सुरेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- वेद प्रकाश ग्रोवर

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, एटा
प्रधान- रामेश्वर दयाल आर्य
मंत्री- वीर प्रकाश आर्य

संक्षिप्त समाचार

रोजड़ में शिविर

- दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (सावरकांठा, गुजरात) द्वारा एक वर्षीय सघन साधना शिविर का भव्य आयोजन 1 अक्टूबर 2014 से 30 सितम्बर 2015 तक चलेगा। शिविर में स्वामी सत्यपति महाराज का रहेगा विशेष सानिध्य।

(ब्रह्म विदानन्द सरस्वती)

- आर्यसमाज अंधेरी, मुम्बई का २८वां वार्षिकोत्सव 25 से २८ दिसम्बर तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न। 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ में आर्यों ने दी आहुति।

(हरीश आर्य, प्रधान)

अवचेतन में कुछ नहीं छिपता

''जो हम नहीं हैं, वैसा दिखने का प्रयास करते हैं। लेकिन इस कोशिश में हमारी असलियत सामने आ ही जाती है। यह सही है कि अवचेतन में हम कुछ भी छिपा नहीं सकते। हमारे चित्त में असंख्य रूप, रस, रंग, ध्वनि, संस्कार कैद पड़े हुए हैं ये गुण समय–समय पर प्रकट होते रहते हैं। पूरी तरह प्रकट नहीं भी आ पाते, तो भी ऊपर के स्वरूप को प्रभावित करते हैं। जैसे एक तालाब है। उसमें पानी भरा हुआ है। पानी साफ–सुथरा है। लेकिन क्या तालाब के अन्दर कीचड़ नहीं है ? हम यही मानकर चलते हैं कि चेतन पहले आता है और अवचेतन बाद में।

रोजा लक्जमवर्ग में इससे बिल्कुल उल्टी बात कही है। उन्होंने कहा है कि चेतन से अवचेतन आता है यह बात ज्यादा सही लगती है। हम नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं, लेकिन हम करते चले जाते हैं। जो कराता है वह अवचेतन मन ही है और आश्चर्य की बात यह है कि वह बिल्कुल उल्टी तरह से कराता है। एक फिल्म अर्थ में गजल की दो पंक्तियाँ हैं।

तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो/ क्या गम है जिसको छिपा रहे हो// –ये पंक्तियाँ मनोविज्ञान से जुड़ी हुई हैं। हंसने का कोई संबंध गम से नहीं होता। हंसना तो प्रसन्नता का परिणाम है, उल्लास का परिणाम है। यदि अंदर गम है, तो चेहरा लटकना चाहिए, लेकिन यहां उल्टा हो रहा है। अंदर गम है और चेहरा मुस्कुरा रहा है। सोचकर देखिए कि यहां क्या हो रहा है? यहां अवचेतना में गम है, लेकिन चेतना में मुस्कुराहट।

यहां यदि अवचेतना का वश चलता, तो चेहरा लटका हुआ रहता, लेकिन वह वेबस है, किंतु कमजोर नहीं। उस मुस्कराहट में गम झलकता है। तभी तो सामने वाला समझ जाता है और पूछता है कि गम क्या है जिसको छिपा रहे हो ? अवचेतन से नहीं सकते आप। मन तो स्फटिक की तरह है, जिसका अपना रंग नहीं होता। जो भी रंग उसके सामने लाया जाएगा, उसी का प्रतिविंब स्फटिक पर बनने लगेगा। जो आदमी बहुत कमजोर होता है, वह हमेशा अपने को शाक्तिशाली बताने की कोशिश करता है। वह हमेशा यह कहता हुए दिखेगा कि देख लूंगा. .... देख लूंगा' लेकिन दरअस्ल यह बात है कि वह देखता कभी नहीं। क्योंकि हकीकत भी है कि गरजने वाले बरसते नहीं। जो अंहकारी है वह प्रत्येक चीज का दिखावा करता है 'चाहे वास्तविकता कुछ भी हो।

अवचेतन से वह निर्धन है, किन्तु उस निर्धनता को छिपाने के लिए उसके चेतन ने उसे छदम् रास्ता दिखा रखा है, कि खूब सज–धजकर आओ, ताकि लोग यह न जान सकें कि तुम गमगीन हो लेकिन क्या ऐसा हो सकता है कि लोग जान ही ना पाएं। नहीं हो पाता। ऐसे लोग अपने अंदर की कमी को बाहरी तरीकों से छिपाने की कोशिश करते हैं और इस कोशिश में वे और भी अधिक खुलते तथा खाली होते चले जाते हैं। अवचेतन से बच पाने का कोई उपाय नहीं है। बच ही नहीं सकते आप और फिर बचना ही क्यों चाहिए ? जो हम हैं उसे छिपाने का प्रयास व्यर्थ है। कुछ लोग कहते हैं –

''ये दुनिया बड़ी जालिम है, इससे सब कुछ छिपाना पड़ता है, सीने में चाहे कितने भी गम हो, ऊपर से मुस्कुराना पड़ता है।

तो उसे शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। रूपांतरित करने का प्रयास होना चाहिए। समृद्ध होने का प्रयास करना चाहिए।

ब्र0 स्वस्ति आर्या
द्वादश, आर्ष कन्या गुरूकुल
(नजीबाबाद)

आर्यों के मूल–निवास का प्रश्न

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

नई सरकार के आने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग ने संस्कृत के साहित्यिक और पुरातात्विक स्त्रोतों के आधार पर प्रमाणित रूप से आर्यों का मूल निवास जानने के लिए 'आर्यन परियोजना' शुरू करने की घोषणा की है। मुझे यह परियोजना हास्यास्पद लगती है, क्योंकि आर्यों की उत्पत्ति कब और कहाँ हुई इसका विवरण ईश्वर द्वारा प्रकाशित वेदों में पहले से ही दिया हुआ है, जो विश्व इतिहास की सबसे पुरानी पुस्तक है। वेदानुसार सृष्टि के आदि काल में ईश्वर ने अपनी शक्ति से आर्यों की अमैथुनी सृष्टि की। उस काल वह नर–नारी, शिशु अवस्था अथवा वृद्धावस्था के न होकर अतुलित शारीरिक–बौद्धिक क्षमताओं से युक्त युवावस्था के थे। यदि शैशवावस्था के रहे होते तो उनका पालन–पोषण कौन करता और कैसे करता। इसी प्रकार यदि वृद्धावस्था में रहे होते तो वेद द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर वह अपना चहुँमुखी विकास कैसे कर पाते।

जर्मन विद्वान मैक्समूलर समेत कई यूरोपीय इतिहासकारों ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि आर्यों का मूल निवास भारत देश नहीं था, अपितु वह यूरोप से आये थे। प्राचीन ईरानी ग्रन्थ अवेस्ता से ऋग्वेद की तुलना करके यह कल्पना की गयी है।

वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने जिस भूभाग पर आर्यों की सृष्टि की, वह आर्यावर्त (अर्थात् भारतवर्ष) था। इसका वर्णन वेदों में भली भांति किया गया है। वेद कहता है कि उस भूभाग में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और बसन्त छः ऋतुएँ अपनी–अपनी छटा बिखेरती हैं। (अथ. 12.1.36)। मेघ अपना सौंदर्य बिखेरते हुए बर्षा करते हैं। (अथ 4.15)। वह भूमि हीरा, पन्ना आदि रत्नों तथा सोना, चाँदी आदि को धारण किये हुए हैं (अथ 12.1.44)। उस भूमि पर गाय, घोड़े, मृग, हाथी आदि चौपाये (अथ 12.1.25), दो पॉव वाले जीव पाये जाते हैं तथा ईस, गरूड़ आदि पक्षी उड़ते हैं (अथ 12.1.51)। आकाश में संचार करने वाली धूल उड़ती हुई, पेड़ों को जड़ से उखाड़ती हुई बहती है (अथ 12.1.51)। वह स्थान नाना औषधियों से पूर्ण है। वेदों में स्थान–स्थान पर उस भू–भाग का सुन्दर, मनोहारी वर्णन भरा पड़ा है। यह वर्णन स्पष्ट घोषणा करता है कि आर्यों का मूल निवास स्थान एक मात्र आर्यावर्त अर्थात् भारत वर्ष ही है।

8 वसंत कुंज, 369/1 वसन्त विहार फ़ेज–1, देहरादून

पृष्ठ–८ का शेष

गोवंश से बदल......

आंकड़ों के अनुसार) के लगभग रही है। इस प्रकार बॉयोडीजल ईंधन की जरूरत के लिहाज से हमें आत्मनिर्भर बना सकता है। इस बायोडीजल के लिए हमें अपनी कृषि भूमि का प्रयोग करने की जरूरत नहीं है। देश में लगभग 2.5 करोड़ हैक्टेयर भूमि बंजर और असिंचित है। इसका प्रयोग कर हम देश की ईंधन आवश्यकता का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त कर सकते हैं।

मीथेन का उत्पादन और बायोडीजल ऐसे दो नये स्त्रोत हैं, जिनमें हम अपनी संपूर्ण ऊर्जा जरूरतें पूरी कर सकते हैं। बात बहुत ध्यान देने की है। यदि हम इस कार्य में आगामी एक दशक तक लगातार जुटे रहें, तो आने वाले सेकड़ों वर्षो तक अपना भविष्य सुनहरा बना सकते हैं। फिर हमें किसी खाड़ी देश का मोहताज नहीं रहना पड़ेगा और नही हमें ईरान से भारत तक किसी पाइप लाइन के बिछाने पर अरबों रूपये बहाने की जरूरत ही पड़ेगी। हमें यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि अरबों रूपये पाइप लाइन बिछाने में खर्च होंगें और फिर अरबी रूपये उसकी सुरक्षा पर। क्योंकि पाइप लाइन अफगानिस्तान और पाकिस्तान जैसे आतंकवाद से ग्रस्त देशों से गुजरेगी। पाइपलाइन की सुरक्षा के मुददे पर आतंकवादी न खुद चैन से बैठेगें और न ही चैन से बैठने देगें। पाइपलाइन बिछाने पर खर्च करने की बजाए ये अरबों रूपये हम मीथेन उत्पादन और गोवंश संरक्षण पर खर्च कर दें, तो देश का भाग्य कल ही पलट जाए। (हिन्दू सभावार्ता से साभार)

नोबेल पुरस्कार गौरव की बात

अतुल कुमार शुक्ला, मुरादाबाद

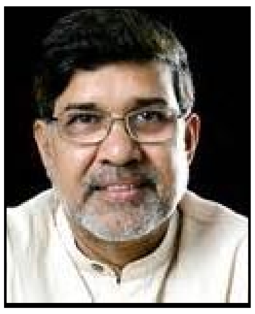

कैलाश सत्यार्थी को शान्ति का नोबेल पुरस्कार मिलना देश के लिए शान की बात है। सत्यार्थी को यह पुरुस्कार इस बात का द्योतक है कि कोई भी आन्दोलन विफल नहीं जाता, एक दिन दुनिया उसका सम्मान करती है, अपने गैर सरकारी संगठन बचपन बचाओ आन्दोलन के माध्यम से लगभग 80,000 बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त कराना एक मिसाल है और सत्यार्थी–मीडिया में स्वीकार कर चुके हैं कि उनकी यह मिशन यात्रा अनवरत् जारी रहेगी। नोबेल पुरूस्कार कमेटी ने सत्यार्थी की तुलना महात्मा गाँधी से कर उनकी इस भावना को सम्मान दिया है। लेकिन उन्हें अपने देश में वो शानदार प्रतिक्रिया नहीं मिली जिसके वो अधिकारी रहे हैं। एक आन्दोलनकारी जब एक जज्बे को लेकर निकलता है तो उसके मन में एक ही जुनून होता है अपने लक्ष्य को पाने की पुरजोर कोशिश करना। पाकिस्तान की मलाला जिन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए कम उम्र में साहसी कदम उठाये, और जान की बाजी तक लगा दी। मलाला द्वारा पुरस्कार समारोह में दोनों ही देशों के प्रधानमंत्रियों को आमन्त्रित करना भी सद्भाव का संदेश है। एक अच्छे उद्देश्य के लिए जारी आन्दोलन के लिए सत्यार्थी और मलाला को नोबले शान्ति पुरस्कार प्रदान कर उनके सिद्धान्तों को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित मान्यता मिलना भारत व पाकिस्तान के साथ–साथ विश्व शांन्ति चाहने वालों के लिए गौरव की बात है।

ई0 विजयपाल द्वारा सामवेद यज्ञ

बड़ौत (बागपत)। इस संसार में बहुत कम लोगों को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है जो अपने द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर दूसरों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। एक स्वतंत्रता सेनानी के घर जन्म लेकर शहीद पिता के आदर्शों पर चलकर अपने परिवार को उन्नति के पथ पर आरूढ़ कर स्वयं संतों का जीवन जीना, लोगों की मदद करना, उच्च सरकारी पद पर रहकर स्वयं सरकार के अफसरों पर भ्रष्टाचार में लिप्त होने के प्रमाण देकर अपने बिजली विभाग को भ्रष्टाचार से मुक्त करने के लिए मुख्यालय के समक्ष सपरिवार धरना देना तथा लोगों के अंतकरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ करना अत्यंत कठिन कार्य था। ऐसा कार्य कोई नहीं कर सकता। क्योंकि इसके लिए आत्मबल की आवश्यकता होती है। जो विजयपाल जैसा ईमानदार तथा सच्चे व्यक्ति की धरोहर होती है। शहीद क्रान्तिकारी पिता के पुत्र विजयपाल के विजय लक्ष्य को लुटेरों की गोलियां भी विचलित नहीं कर सकी। उनका पीछा नहीं छोड़ा और सरकारी खजाने की रक्षा की। ऐसे कर्त्तव्य निष्ठ कम ही होते हैं।

अपने दोनों भाईयों की नृशंष हत्या के बाद परिवारों को संभालना तथा बच्चों को उच्च शिक्षा दिला अपने कर्त्तव्य में जोड़ा। इनके दवारा से कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटा। यह जरूरी नहीं सदैव इनका घर धन–धान्य से भरा रहा हो। तब भी इन्होंने अनेक छात्रों की अध्ययन में सहायता की तथा अनेक लोगों को रोजगार दिया तथा दिलाया। दान, देना, धार्मिक आयोजन करना। कुरीतियों को दूर करने के लिए संघर्ष करना, कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध जन जागरूक के लिए एक गाड़ी के साथ बागपत जिले के प्रत्येक गांव में प्रचार कराया। स्वामी दयानन्द के लिए समर्पित राष्ट्रीय सैनिक संस्था के प्रान्तीय अध्यक्ष इन सब कारणों से ई0 विजयपाल आर्य व्यक्तियों में समाज में विशिष्ट हो जाते हैं। जिसने अपना जीवन ईमानदारी, दान, संत व धार्मिक अनुष्ठानों में व्यतीत किया। अपने अस्सी वर्ष में प्रवेश होने पर शेष जीवन में साधना के संकल्प मृत्यु के पश्चात् देह दान का संकल्प लिया। इस अवसर पर समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों को जहां सम्मानित किया गया, निर्बल, अपंगों को वस्त्रदान से पूर्व स्वामी वेदानन्द सरस्वती के ब्रह्मव्य में सामवेद परायण यज्ञ कर 31 अक्टूबर से 09 नवम्बर तक कराया था। 11 से 27 नवम्बर तक रैकी, एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर तथा उससे पूर्व 16 से 31 अक्टूबर तक संस्कृत सम्भाषण शिविर आयोजित किया।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ 23 से

नोएडा (सुमन कुमार वैदिक)। ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी द्वारा स्थापित वृहद यज्ञ परम्परा में उनके शिष्य वेदपाल सिंह प्रतिवर्ष वेद पारायण यज्ञ का आयोजन करते हैं। इसी श्रंखला में उनके निवास स्टाफ क्वार्टर, एन.एस.ई.जेड. बाउंड्री, नोएडा फेस–2 में अथर्ववेद ब्रह्म महायज्ञ का आयोजन 23 से 25 जनवरी तक समारोह पूर्वक किया जा रहा है। आ. अरविन्द शास्त्री ब्रह्मा होंगे तथा भीष्म आर्य भजन प्रस्तुत करेंगे।

सामवेद पारायण यज्ञ १८ को

ग्रेटर नोएडा। सुमन कुमार वैदिक की पुत्री गार्गी के शुभ विवाह से पूर्व एवं पुत्री श्रुति की एच.ए.एल. में नियुक्ति के उपलक्ष्य में डॉ. पवित्रा विद्यालंकार (सासनी) के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ १८ फरवरी को सम्पन्न होगा।

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु0 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु0 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. **अशोक कुमार आर्य**, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
दूर.-**05922–262033**, चल.- 09758833783, 08273236003

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
:05922-262033,
9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com